✡ उच्च रक्तचाप की समस्या ✡

विश्वस्तर पर प्रतिवर्ष ६.४ लाख या १६.५ प्रतिशत मृत्यू उच्च रक्तचाप के कारण होती है। इसमें ५१% दिमागी आघात से जबकि ४५% हृदयरोग के कारण होती है।

उच्च रक्तचाप यह हमारे भारत देश में परिस्थितिवश मृत्यू दर में वृद्धी का मुख्य रोग है तथापि अब यह ग्रामीण क्षेत्रों में भी बढ रहा है। माना जा रहा है कि कुल १४ करोड व्यक्ति उच्चरक्तचाप के शिकार हो चुके है। तथापि यह संख्या अब २१ करोड ४० लाख का आकड़ा भी सन २०३० तक पार कर लेगा।

उच्च रक्तचाप के संकट को सामान्यतः ऐसी स्थिति जब उपरी पारा (Systolic) दबाव १८० mmHg तथा निचला पारा (Diastolic) स्तर १२० mmHg के स्तर को पार कर लेता है।

इस रोग को उच्च या बढा हुआ रक्त का दबाव के रूप में भी जाना जाता है। उक्त रक्तचाप हृदयाघात की संभावनाओं को बढ़ा देता है, दिमागी आघात एवं मूत्रपिंड भी अकार्यक्षम हो सकता है। अनियमित उच्च रक्तचाप के चलते अंधत्व, धडकनों में अनियमितता या हृदयाघात हो सकता है। जो भी हो उच्च रक्तचाप से बचा जा सकता है, इसका इलाज किया जा सकता है। शीघ्र उच्च रक्तचाप की जांच कर पता लगाना चाहिये, हालांकि प्रत्येक व्यक्ति को उसके उच्चरक्तचाप की जानकारी रहना आवश्यक है।

उच्च रक्तचाप की समस्या में रक्त में दबाव अप्रत्याशित दबाव बढ़ जाता है तथा वह दिमागी आघात कर सकता है। मुख्यरूप से उच्चतम रक्तचाप उपरी (Systolic) १८० मिलीमीटर पारा (mm.Hg) या निम्न (Diastolic) १२० मिलीमीटर पारा (mm.Hg) रक्त धमनियों को आघात पहुंचा सकता है। वह दर्द देती है या रक्त बहने लगता है। परिणाम स्वरूप हृदय अपना कार्य प्रभावी रूप से नहीं कर पाता। परंतु वर्तमान में उच्चरक्तचाप के बारे में अत्यधिक जानाकारी व परिपूर्ण ज्ञान के चलते १ से २ प्रतिशत व्यक्ति की आकस्मित रूप से अपने जीवन में अव्यवस्थित रहते है।

BP Classification	SBP (mmHg)	DBP (mmHg)
सामान्य	<120	and <30
पूर्व रक्तचाप की स्थिति	120-139	or 80-89
रक्तचाप का पहला स्तर	140-159	or 90-99
रक्तचाप का दूसरा स्तर	≥160	or ≥100

उच्च रक्तचाप की महत्व की प्राथमिक स्थिति	उच्च रक्तचाप का आपातकाल परिस्थिति
• शरीर के किसी भी अंग लगातार बिना घाव के परिवर्तन होना अत्यावश्यक प्रथमस्थिति में निम्न लक्षण दिखाई देते है। a. अत्यधिक सिरदर्द b. साँस लेने में समस्या c. नाक से रक्त बहना d. भारीपन व सुस्ती लगना • उक्त परिस्थितियों में रोगी रक्तचाप कम करने की दवाओं के माध्यम से निरंतर रक्तचाप को नियंत्रित किया जा सकता है।	• लगातार सूजन के कारण उच्च रक्तचाप में शरीर के किसी अंग को आघात पहुंचाना। • चिकित्सालय में विभिन्न जॉचो के दौरान घाव, सूजन, अन्य लक्षणों का पता लगाना, सीनें में दर्द, सिरदर्द, उल्टियाँ, जी मचलना, साँस में तकलीफ, अस्वस्थ, शरीर कांपना आदि। • रोगी को ऐसी असवस्था में चिकित्सालय में भर्ती कर के I.V. के माध्यम से उच्च रक्तचाप को नियंत्रण में लाया जाना चाहिये।

***अंग आघात से तात्पर्य :** मूत्रपिंड आघात, दिमागी आघात गर्भधारणा के दौरान विभिन्न अंगो को आघात, नेत्र समस्या

लगातार व गहराई से प्राथमिक व गंभीर उच्च रक्तचाप को परखा जा सकता है। चिकित्सक सभी दवाओं, हर्बल उपचारों के बारे में जानकारी संग्रहित कर सकता है। दवाओं का उपभोग पिछली दवाओं का सेवन, पिछली जांच रिपोर्ट के साथ साथ विभिन्न मापक यंत्रो से यह नापा जा सकता है।

चिकित्सा :-

उच्च रक्तचाप की प्राथमिक स्थिति को दवाओं के माध्यम से २४ से ४८ घंटो में नियंत्रित किया जा सकता है। प्रथम २४ घंटो में २५ प्रतिशत कमी लाई जा सकती है। दवा के प्रमाण को घटा बढ़ा कर व सही दवा देकर इसे व्यवस्थित किया जा सकता है। साथ ही आवश्यक होनेपर व नियमित उपचार व ध्यान देने से इस पर नियंत्रण किया जा सकता है।

उच्च रक्तचाप की गंभीर अवस्था में शीघ्र चिकित्सा अत्यावश्यक हो जाती है जिसमें अतिदक्षता विभाग (ICU) में भर्ती होना। लगातार मूत्र की जॉच व दिमागी जॉच आवश्यक हो जाती है। चिकित्सा के दौरान IV के माध्यम से दवायें दी जाती है। मूल उद्देश रक्त के दबाव को पहले घंटे में २५% कम कर १६०/१०० तक लाना होता है, पश्चात् अगले ६ घंटो में नियंत्रित करना होता है। इसके दौरान विभिन्न पद्धतियों से उपचार किया जाता है। रक्त दबाव को नियंत्रित करना अनिवार्य होता है। अन्यथा वह

शरीर के किसीभी अंग को हानि पहुंचा सकता है। IV पद्धति के पश्चात दवाओं का प्रयोग किया जा सकता है।

फार्मसिस्ट की भूमिका :-

उच्च रक्तचाप की समस्या बढ़ने के कारण है दवा का सेवन भूल जाना या जान बूझकर दवा नहीं लेना। ऐसी परिस्थितियों में फार्मसिस्ट द्वारा पर्याप्त जानकारी व नियमित सलाह रोगी को इस बीमारी से निजात दिला सकती है। फार्मसिस्ट के पास ऐसे पर्याप्त प्रभावी साधन उपलब्ध है जो इस समस्या से रोगी को बचा सकते है।

१. हम उच्च रक्तचाप के रागी को पहचानने में अहम भूमिका निभा सकते है कि रोगी का रक्तचाप नियंत्रित है या नहीं यह विभिन्न माध्यमों से परख सकते है।
   a. स्वयं जॉच कर
   b. BP मापक यंत्र का उपयोग कर
   c. रोगी के चिकित्सीय कागजों के माध्यम से
      I. रक्तशर्करा, चर्बी व अन्य
      II. प्रौढ रोगी
२. रोगी को प्रोत्साहन
   a. नियमित रोगी का रक्तचाप देखना।
   b. रक्तचाप का पूरा रिकार्ड रखना।
   c. रक्तचाप में कम ज्यादा होने पर शीघ्र चिकित्सक से संपर्क करना।
३. रोगीयों को उपयुक्त शिक्षण देकर, रक्तचाप मापक यंत्र के बारे में तकनीकी जानकारी देना।
४. रोगीयों को दवा की आवश्यकता से अवगत कराना ही रक्तचाप को रोका जा सकता है।
५. फार्मसिस्ट को यह तय करना चाहिये कि उपयुक्त व पर्याप्त उपचार व रोगी को समझें ऐसी व्यवस्था करें।
६. तकनीकी रक्तचाप मापक यंत्र के दुरूपयोग के संदर्भ में जानकारी देना।

उच्च रक्तचाप से ग्रस्त रोगी को अगर परिपूर्ण नियंत्रित नहीं किया गया तो परिस्थितिवश अनेक उन्नयन दिखाई देते है, तथा इसमें रूग्ण अस्वस्वस्था या यहॉ तक कि मृत्यू भी हो सकती है। विभिन्न रोगियों में प्राथमिक अत्यावश्यक उच्च रक्तचाप के रोगी को मुखमार्ग से लेनेवाली दवाओं से निरंतर नियंत्रण में रखा जा सकता है। यह अनेक घंटो तथा अनेक दिनों तक उपचार करने से संभव हो पाता है।

उच्च रक्तचाप के आपातकालीन अवस्था में रोगी को अतिदक्षता चिकित्सा केन्द्र (ICU) में भर्ती किया जाता है तथपि शरीर के किसी अंग के आघात को ठीक होने तक IV पद्धती से इलाज किया जाता है। फार्मासिस्ट के अनुभव, दवापद्धती के उपयोग व उपचार के ज्ञान के आधार पर अपने माध्यमों का उपयोग कर उच्चरक्तचाप के रोगियों को ठीक किया जा सकता है।

संदर्भ : **http://www.maha-arogya.gov.in**
http://www.who-int/cholera/
www.cdc.gov

संकलन – कु. किन्नरी देसाई
औषध माहिती केंद्र प्रमुख,
महाराष्ट्र राज्य औषध व्यवसाय परिषद

हिंदी अनुवाद : हरीशचंद्र गणेशानी
कार्यकारी सदस्य–एमएसपीसी, मुंबई, कॅम्प नागपुर (Mob. 9822574108)